



ऑक्टैव- 2025



28 से 30 अप्रैल, 2025

हेरिटेज गार्डन, केएनएच मेडिकल कॉलेज परिसर, मायागंज, भागलपुर, बिहार



उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार



OCTAVE2025

Colors of North Eastern States

Octave brings you the rich cultural diversity and heritage from the eight North - Eastern states of Assam, Meghalaya, Tripura, Manipur, Mizoram, Nagaland, Arunanchal Pradesh & Sikkim.

Glimpse of the cultural heritage of North Eastern States.

निदेशक की कलम से...



'ऑक्टेव 2025' आठ पूर्वोत्तर राज्यों असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और विरासत से परिचित कराता है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में कई विविध और आकर्षक लोक नृत्य पाए जाते हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी अनूठी सांस्कृतिक विरासत है, और इन नृत्यों में उनकी कहानियां और परंपराएं दिखाई देती हैं।

यह कार्यक्रम केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, कला और समुदाय की भावना का उत्सव है। 'ऑक्टेव 2025' का उद्देश्य संगीत, नृत्य और रचनात्मकता के माध्यम से लोगों को एकजुट करना और समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है।

हमारा यह प्रयास है कि प्रत्येक प्रतिभागी और दर्शक इस मंच के माध्यम से अपनी प्रतिभा को निखारें और प्रेरणा प्राप्त करें। इस वर्ष, हमने विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए कई नवीन पहल की हैं, जो हमारे समुदाय की एकता और सामंजस्य को दर्शाती हैं।

मैं सभी कलाकारों और दर्शकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग और उत्साह ने 'ऑक्टेव 2025' को एक अविस्मरणीय अनुभव बनाया है।

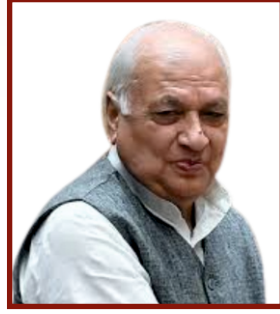
आशिस गिरि

प्रभारी निदेशक
उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र
प्रयागराज

आरिफ़ मोहम्मद ख़ान
ARIF MOHAMMED KHAN



राज भवन
पटना-800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज, अप्रैल, 2025 में बिहार में "ऑक्टोव-2025" का आयोजन कर रहा है।

हमारे देश में सदियों से संगीत, नृत्य, नाटक और चित्रकला जैसी ललित कलाओं की महान परम्परा रही है। इन कलाओं को हमारी महान आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत से प्रेरणा मिलती है। सांस्कृतिक केन्द्र ने हमारी पारंपरिक कला और संस्कृति को संरक्षित और पुनर्जीवित करने में सराहनीय भूमिका निभाई है।

मैं इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(आरिफ़ मोहम्मद ख़ान)

रामदास आठवले
RAMDAS ATHAWALE



सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA



संदेश

DO-1994/SJM-Mum/2025

Date:- 12.04.2025

It is indeed a matter of pleasure to learn that North Central Zone Cultural Centre Prayagraj, Ministry of culture, Government of India is organizing Octave-2025 in Bhagalpur, Bihar in April.

I am confident that dignified performances, rare cultural heritage and best initiatives of traditional culture will participate in this festival.

I extend my best wishes on the occasion.

(Ramdas Athawale)

**To,
Shri Ashis Giri
Director in-charge
NCZCC, Prayagraj**

सबका साथ, सबका विकास

सबका विश्वास, सबका प्रयास



उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

केशव प्रसाद मौर्य



विधान भवन
लखनऊ

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज द्वारा पूर्वोत्तर के आठ राज्यों के पारम्परिक शिल्प, व्यंजन और लोक नृत्यों का इंद्रधनुषीय कार्यक्रम माह अप्रैल में भागलपुर, बिहार में आयोजित होने जा रहा है।

सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण समाज में शांति, सद्भावना और भाईचारा की भावना विकसित होती है तथा लोग कला, साहित्य एवं संस्कृति के विकास में अभिरुचि लेते हैं।

मैं ऑक्टोबर- 2025 की समग्र सफलता के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं।

आपका,

(केशव प्रसाद मौर्य)

राजेन्द्र शुक्ल

उप मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश शासन



कार्यालय (भोपाल) बी-9, चार इमली, भोपाल

दूरभाष: 0755-2441538 2570628

E-mail: dem-rshukla@mp.gov.in

मंत्रालय कक्ष: B-304, VB-2, वल्लभ भवन, भोपाल



शुभकामनाएँ

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज द्वारा अप्रैल - 2025 में भागलपुर बिहार में पूर्वोत्तर राज्यों के लोकनृत्यों का इंद्रधनुषीय आयोजन ऑक्टोबर - 2025 का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

भारत के प्रत्येक प्रदेश की अपनी सांस्कृतिक विशेषताएं हैं जो मुख्यतः वहां के लोक संगीत, लोकनाट्य एवं लोक नृत्य के माध्यम से व्यक्त होती हैं। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इन प्राचीन और पारंपरिक विधाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मैं उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज के प्रभारी निदेशक श्री आशीस गिरि और प्रभारी कार्यक्रम श्री एम.एम.मणि सहित सभी आमंत्रित कलाकारों को इस अति विशिष्ट आयोजन की बधाई देता हूं और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(राजेन्द्र शुक्ल)

अनिल श्रीवास्तव

आई.सी.ए.एस.
अपर महानिदेशक (बजट एवं लेखा)



Anil Srivastava

I.C.A.S.
Additional Director General (B&A)



मुझे यह जानकारी अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज, द्वारा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के मार्गदर्शन में भागलपुर, बिहार में दिनांक 28 अप्रैल 2025 से 30 अप्रैल 2025 तक "ऑक्टव" कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"ऑक्टव" कार्यक्रम पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों के पारंपरिक शिल्प, व्यंजन, लोक गीतों और लोक नृत्यों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, विरासत, परंपरा और शैली को प्रदर्शित करने और पहचान दिलाने का उत्कृष्ट मंच प्रदान करने में सफल रहा है ! उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज, का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है और इस तरह के प्रयासों की और आवश्यकता है ताकि भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से जनमानस को अवगत किया जा सके !

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यक्रम के समापन के पश्चात उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज, द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन होना है जिसमें इन कलाओं की विरासत और प्रदर्शन को संकलित कर अधिकाधिक जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। मैं इस स्मारिका के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएँ और बधाई प्रेषित करता हूँ और साथ ही अपेक्षा करता हूँ की भविष्य में भी इस तरह के अनूठे प्रयास जारी रहेंगे ताकि लोक कलाकारों को और अधिक प्रोत्साहित किया जा सके !

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

दिनांक : ७ मई २०२५

(अनिल श्रीवास्तव)
अपर महानिदेशक



भारत का लोक सेवा प्रसारक / India's Public Service Broadcaster

Prasar Bharati House
Copernicus Marg, New Delhi- 110001
Tel. : 011-23118426, Mob.: +91-9311631342
E-mail : sraniil.66@gov.in • Website : www.prasarbharati.gov.in





सत्यमेव जयते



जन विश्वास संकल्प हमारा

हृदय कान्त झा

आई.पी.एस.

वरीय पुलिस अधीक्षक, भागलपुर, बिहार

संदेश

आपके सांस्कृतिक कार्यक्रम ऑक्टोव-2025 में बतौर अतिथि मुझे सम्मिलित होकर बहुत अच्छा लगा। मुझे इस आयोजन से जोड़ने के लिए केंद्र निदेशक उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र श्री आशिस गिरि जी एवं प्रभारी कार्यक्रम श्री एम.एम. मणि जी का हार्दिक आभार। यह प्रयास हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और उसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने का एक सराहनीय कदम है। आपकी यह पहल कला, साहित्य, और संस्कृति के प्रति प्रेम और समर्पण को दर्शाती है।

आशा है आप ऐसे ही सकारात्मक विचारों को विविध मंचों के माध्यम से सदैव प्रेरित करते रहेंगे और संस्कृति के विविध रंगों को एक मंच पर लाएंगे।

आपके इस रचनात्मक कार्य के लिए मेरी ओर से अनंत शुभेच्छाएँ।

(हृदय कान्त झा)

बिहू नृत्य



बिहू नृत्य असम की सांस्कृतिक धरोहर का एक जीवंत और उत्साहपूर्ण प्रतीक है, जो मुख्य रूप से रोंगाली बिहू उत्सव के दौरान प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य प्रकृति, उर्वरता और जीवन के उत्सव को दर्शाता है, जिसमें तेज़ लय, तालबद्ध कदम और रंगीन परिधान शामिल हैं। पुरुष और महिला दोनों इस नृत्य में भाग लेते हैं, जहाँ ढोल, पेप्पा, और ताल जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुन पर नर्तक लयबद्ध गतियों के साथ खेतों और प्रेम की कहानियाँ बुनते हैं।

महिलाएँ मेखला-चादर जैसे पारंपरिक परिधानों में सुंदर मुद्राएँ और कोमल हाव-भाव प्रदर्शित करती हैं, जबकि पुरुष ढोल की थाप पर जोशपूर्ण कदमों के साथ नृत्य करते हैं। बिहू नृत्य का संगीत, जो बिहू गीतों से प्रेरित होता है, प्रेम, प्रकृति और सामाजिक एकता के विषयों को उजागर करता है। यह नृत्य न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि असमिया समुदाय की एकता, उत्साह और सांस्कृतिक गौरव को भी व्यक्त करता है।

आधुनिक समय में, बिहू नृत्य ने वैश्विक मंच पर भी अपनी पहचान बनाई है, और यह असम की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित करने का एक शक्तिशाली माध्यम बना हुआ है। इसकी जीवंतता और समावेशी प्रकृति इसे सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए आकर्षक बनाती है।



झूमूर नृत्य



झूमूर नृत्य असम का एक पारंपरिक लोक नृत्य है, जो मुख्य रूप से असम के चाय बागान क्षेत्रों में रहने वाली आदिवासी और मजदूर समुदायों द्वारा किया जाता है। यह नृत्य सामाजिक समारोहों, उत्सवों और खेतों में काम के बाद मनोरंजन के लिए किया जाता है। इसे आमतौर पर समूह में पुरुष और महिलाएं एक साथ प्रदर्शन करते हैं, जिसमें गायन, नृत्य और पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। झूमूर नृत्य में मादल, नगाड़ा, बांसुरी, और मंजीरा जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। गीत आमतौर पर लोक भाषा में गाए जाते हैं, जो प्रेम, प्रकृति, और दैनिक जीवन से प्रेरित होते हैं। यह एक जीवंत और लयबद्ध नृत्य है, जिसमें सरल लेकिन ऊर्जावान कदम और हाव-भाव शामिल होते हैं। नर्तक एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाते हुए गोलाकार या पंक्तियों में नृत्य करते हैं। नर्तक पारंपरिक असमिया परिधान पहनते हैं। महिलाएं अक्सर मेखला-चादर या रंग-बिरंगे परिधान पहनती हैं, जबकि पुरुष धोती-कुर्ता या अन्य पारंपरिक वस्त्र पहनते हैं। सांस्कृतिक महत्व: झूमूर नृत्य असम के चाय बागान मजदूरों की संस्कृति और एकता का प्रतीक है। यह नृत्य समुदाय के बीच सामाजिक बंधन को मजबूत करता है और उनकी कला और परंपराओं को जीवित रखता है। झूमूर नृत्य विशेष रूप से बिहु उत्सव, शादियों, और अन्य सामुदायिक समारोहों में किया जाता है। यह नृत्य असम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय है।

सुमीनागा वार नृत्य



सुमीनागा युद्ध नृत्य नागालैंड की खियामनियुंगान जनजाति का एक पारंपरिक लोक नृत्य है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान और वीरता का प्रतीक है। यह नृत्य विशेष रूप से मिउ और त्सोकुम जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों के दौरान किया जाता है। सुमीनागा नृत्य में पुरुष और महिला दोनों भाग लेते हैं, जो पारंपरिक वेशभूषा जैसे अहंगकुहा, भाले, तलवार और ढाल के साथ प्रस्तुति देते हैं। यह नृत्य युद्ध के परिदृश्य को दर्शाता है, जिसमें नर्तक ढोल की ताल पर समन्वित और ऊर्जावान गतिविधियों के साथ अपनी शक्ति और साहस का प्रदर्शन करते हैं। यह न केवल एक नृत्य है, बल्कि सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक गौरव का उत्सव भी है, जो नागालैंड की समृद्ध परंपराओं को जीवंत रखता है।



मारुणी नृत्य



मारुणी नृत्य सिक्किम का एक पारंपरिक लोकप्रिय नृत्य है, जो मुख्य रूप से नेपाली समुदाय द्वारा किया जाता है। यह प्राचीन नृत्य तिहाड़ (दिवाली) जैसे त्योहारों और विवाह जैसे सामाजिक अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है। नर्तक रंग-बिरंगे परिधानों और आभूषणों में सजकर, नौमती बाजा (नौ वाद्य यंत्रों के समूह) की धुन पर नृत्य करते हैं। यह नृत्य 'बुराई पर अच्छाई की जीत' का प्रतीक है। यह नृत्य मगर समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है। मारुणी में 'धाटू वराय' नामक विदूषक बच्चों को हंसाने के लिए शामिल होता है। यह नृत्य सिक्किम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है।



यकजोंग नृत्य



यकजोंग नृत्य अरुणाचल प्रदेश के आदि जनजाति का एक महत्वपूर्ण पारंपरिक नृत्य है, जो उनकी सांस्कृतिक विरासत और सामुदायिक भावना को दर्शाता है। यह नृत्य विशेष रूप से बच्चों द्वारा किया जाता है, जो गाँव के प्रत्येक घर में जाकर प्रदर्शन करते हैं और उत्साहपूर्वक स्वागत किए जाते हैं। यकजोंग नृत्य में जीवंत और ऊर्जावान गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जो आदि जनजाति की प्रकृति और सामुदायिक जीवन से गहरे जुड़ाव को प्रदर्शित करती हैं। नर्तक पारंपरिक वेशभूषा पहनते हैं, जिसमें रंग-बिरंगे परिधान और आभूषण शामिल होते हैं, जो नृत्य को और आकर्षक बनाते हैं। यह नृत्य न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि जनजातीय परंपराओं और एकता को संरक्षित करने का प्रतीक भी है।



किट लाम नृत्य



किट लाम नृत्य मणिपुर की कबुई नगा जनजाति का एक जीवंत और रंग-बिरंगा लोक नृत्य है, जो मुख्य रूप से गंग-नगाई उत्सव के दौरान प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य फसल के उत्सव का प्रतीक है और इसमें क्रिकेट (झींगुर) की गतिविधियों की नकल की जाती है, जो इसकी लयबद्ध और जीवंत गतियों में स्पष्ट रूप से झलकता है। नर्तक पारंपरिक रंगीन परिधानों में सजकर, भारी ड्रमों और ऊँची स्वर वाली गायन शैली के साथ तालमेल बिठाते हुए प्रदर्शन करते हैं। यह नृत्य न केवल कबुई समुदाय की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है, बल्कि उनकी सामाजिक एकता और प्रकृति के प्रति गहरे जुड़ाव को भी व्यक्त करता है। किट लाम का उत्साहपूर्ण और लयबद्ध प्रदर्शन दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है, जो मणिपुर की समृद्ध लोक परंपराओं का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।



होजागिरी नृत्य



होजागिरी, त्रिपुरा राज्य का एक लोकप्रिय लोकनृत्य है। त्रिपुरी के पश्चात् रियांग त्रिपुरा की जनजातियों में द्वितीय स्थान रखते हैं। अन्य जनजातियों की भाँति रियांग की भी अपनी एक अद्वितीय कला संस्कृति है, जो इनके जीवन का अभिन्न अंग है। रियांग समुदाय के नृत्य अन्य जनजातियों से भिन्न हैं किन्तु नृत्यों के विषय-वस्तु सामान्यतः मिलते-जुलते हैं। होजागिरी नृत्य इस जनजाति का सर्वाधिक मनमोहक नृत्य है। इस नृत्य में कमर का ऊपरी हिस्सा एवं हस्त मुद्राएं सीमित होते हैं जबकि नृत्य के पद-संचालन आकर्षक होते हैं। नर्तकी अपने सिर पर बोतल में जलते हुए दिये को मटकी के साथ रखकर संतुलन बनाये हुए नृत्य करती है। अप्रैल माह में वार्षिक महोत्सव के दौरान वैभव की देवी 'मैनुमा' से लोक कल्याण की याचना की जाती है। रियांग जनजाति का विश्वास है कि इस देवी को नृत्य और गीत द्वारा प्रसन्न रखने पर फसल अच्छी होती है और जीवन सुखमय रहता है।



वांगला



मेघालय में गारो जनजाति का वांगला नृत्य एक प्रमुख सांस्कृतिक नृत्य है, जो वांगला त्योहार का अभिन्न अंग है। यदि आपका मतलब कोई अन्य नृत्य या "बंगला" (बंगाली नृत्य) से है, तो कृपया स्पष्ट करें। फिलहाल, मैं वांगला नृत्य पर टिप्पणी दे रहा हूँ, क्योंकि यह मेघालय के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक है। वांगला नृत्य मेघालय के गारो समुदाय का एक जीवंत और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध पारंपरिक नृत्य है, जो वांगला त्योहार के दौरान प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य कृषि देवता 'मिसी सलज ong' के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और समृद्धि की प्रार्थना के लिए किया जाता है। यह त्योहार, जो आमतौर पर नवंबर में फसल कटाई के मौसम में मनाया जाता है, समुदाय की एकता और उत्साह को दर्शाता है। वांगला नृत्य में पुरुष और महिलाएँ दोनों भाग लेते हैं, जो रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान जैसे महिलाओं के लिए 'दकमंडा' और पुरुषों के लिए 'धोती' पहनते हैं। नृत्य में तालबद्ध कदम, तालियों की गूंज, और मृदंग, बांसुरी, और सरांगी जैसे वाद्य यंत्रों का समन्वय होता है। नर्तकों की सामंजस्यपूर्ण चाल और आकर्षक वेशभूषा इसे देखने में अत्यंत मनमोहक बनाती है। यह नृत्य न केवल गारो समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है, बल्कि प्रकृति और कृषि के साथ उनके गहरे जुड़ाव को भी उजागर करता है। वांगला नृत्य मेघालय की सांस्कृतिक विविधता और समुदाय की जीवंतता को अनुभव करने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है। यह पर्यटकों के लिए भी एक विशेष आकर्षण है, जो गारो हिल्स की सांस्कृतिक सुंदरता को करीब से देख सकते हैं।

चेराव नृत्य



चेराव नृत्य, जिसे बांस नृत्य के रूप में भी जाना जाता है, एक पारंपरिक मिजोरम नृत्य है जिसमें नर्तक क्षैतिज रूप से रखे गए बांस के खंभों के बीच अंदर-बाहर घूमते हैं, जिससे एक लयबद्ध पैटर्न बनता है। भारतीय संस्कृति और टेस्टबुक के अनुसार, यह त्योहारों, समारोहों और यहाँ तक कि फसल उत्सव जैसे विशेष अवसरों के दौरान किया जाने वाला एक लोकप्रिय नृत्य है। चेराव नृत्य एक बांस नृत्य है, जिसका अर्थ है कि इसमें प्रदर्शन में एक प्रमुख तत्व के रूप में बांस के खंभों का उपयोग शामिल है। यह पूर्वोत्तर भारत के एक राज्य मिजोरम के मिजो लोगों का एक पारंपरिक नृत्य रूप है। अब यह विभिन्न समारोहों का एक हिस्सा है, चेराव नृत्य की उत्पत्ति एक अनुष्ठान के रूप में हुई है, जो संभवतः दिवंगत आत्माओं को सांत्वना देने से संबंधित है। नृत्य में पुरुष और महिला दोनों शामिल होते हैं जो एक साथ प्रदर्शन करते हैं, जिसमें पुरुष बांस को पकड़ते हैं और महिलाएँ उनके बीच नृत्य करती हैं। बांस की खनक और नर्तकियों की हरकतों से बनने वाले लयबद्ध पैटर्न चेराव नृत्य के आकर्षण का एक प्रमुख हिस्सा हैं। चेराव नृत्य के साथ अक्सर संगीत वाद्ययंत्र के रूप में गोंग और ड्रम का उपयोग किया जाता है। मिजोरम में त्योहारों और समारोहों के दौरान चेराव नृत्य प्रदर्शन अक्सर देखे जाते हैं, जिसमें चापचर कुट उत्सव जैसे कार्यक्रम शामिल हैं।





OCTAVE 2025





OCTAVE 2025



पंच वाक में पूर्वोत्तर भारत के परिधानों का दिखा जलवा

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के परिधानों का दिखा जलवा... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

संस्कृतिक विरासत से सजा कार्यक्रम

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के संस्कृतिक विरासत से सजा कार्यक्रम... (Text continues with details of the cultural program.)

संस्कृतिक विरासत से सजा कार्यक्रम

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के संस्कृतिक विरासत से सजा कार्यक्रम... (Text continues with details of the cultural program.)

पूर्वोत्तर राज्यों की सांस्कृतिक विविधता ने लोगों का मन मोहा

भारत सरकार, हिन्दुस्तान प्रतिष्ठान, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा मार्गदर्शन स्थित निजी स्थानों में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का आनंद चरित्वर पुलिस अधीक्षक हृदय कोत ने लिया। अंतिम दिन पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विविधता लोगों का मन मोहा गया।

अंतिम दिन की शुरुआत मिजोरम से आए कलाकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्वर नृत्य से हुई। बांसों के बीच संतुलित कदमों पर आधारित इस नृत्य ने दर्शकों का मन मोहा लिया। दर्शकों ने जोरदार तालियों से कलाकारों का हौसला बढ़ाया। इसके बाद सिपुर के देवनागरी रियां एवं उनके दल ने पारंपरिक होना गिरि नृत्य प्रस्तुत किया, जिसे खूब सराहा गया। मेघालय के जंग रिमोय और उनके दल ने वांगल नृत्य के माध्यम से अपने राज्य की लोक संस्कृति को दर्शकों के सामने जीवंत किया। अरुणाचल प्रदेश से आए नाना पेलंग ने पारंपरिक योगा नृत्य को प्रस्तुत किया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं, समान प्रस्तुति के रूप में असम के सुप्रसिद्ध बिहू नृत्य ने सभी को धुंधा दिया। इस प्रस्तुति में बिनाती देवी और उनके साथी कलाकारों ने शानदार नृत्य कर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के प्रभाती भवन मोहन मोग ने सभी कलाकारों, शिल्पकारों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन शवित मिश्रा ने किया।

पूर्वोत्तर भारत की लोक विविधताओं के दिखे रंग

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के लोक विविधताओं के दिखे रंग... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

पूर्वोत्तर भारत की लोक विविधताओं के दिखे रंग

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के लोक विविधताओं के दिखे रंग... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

अपना भागलपुर

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के अपना भागलपुर... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

अपना भागलपुर

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के अपना भागलपुर... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

पूर्वोत्तर राज्यों की सांस्कृतिक विविधता ने लोगों का मन मोहा

भारत सरकार, हिन्दुस्तान प्रतिष्ठान, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा मार्गदर्शन स्थित निजी स्थानों में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का आनंद चरित्वर पुलिस अधीक्षक हृदय कोत ने लिया। अंतिम दिन पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विविधता लोगों का मन मोहा गया।

अंतिम दिन की शुरुआत मिजोरम से आए कलाकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्वर नृत्य से हुई। बांसों के बीच संतुलित कदमों पर आधारित इस नृत्य ने दर्शकों का मन मोहा लिया। दर्शकों ने जोरदार तालियों से कलाकारों का हौसला बढ़ाया। इसके बाद सिपुर के देवनागरी रियां एवं उनके दल ने पारंपरिक होना गिरि नृत्य प्रस्तुत किया, जिसे खूब सराहा गया। मेघालय के जंग रिमोय और उनके दल ने वांगल नृत्य के माध्यम से अपने राज्य की लोक संस्कृति को दर्शकों के सामने जीवंत किया। अरुणाचल प्रदेश से आए नाना पेलंग ने पारंपरिक योगा नृत्य को प्रस्तुत किया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं, समान प्रस्तुति के रूप में असम के सुप्रसिद्ध बिहू नृत्य ने सभी को धुंधा दिया। इस प्रस्तुति में बिनाती देवी और उनके साथी कलाकारों ने शानदार नृत्य कर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के प्रभाती भवन मोहन मोग ने सभी कलाकारों, शिल्पकारों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन शवित मिश्रा ने किया।

असम के बिहू व मिजोरम के चराव नृत्य का भागलपुर में दिखा अद्वितीय संगम

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के असम के बिहू व मिजोरम के चराव नृत्य का भागलपुर में दिखा अद्वितीय संगम... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

असम के बिहू व मिजोरम के चराव नृत्य का भागलपुर में दिखा अद्वितीय संगम

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के असम के बिहू व मिजोरम के चराव नृत्य का भागलपुर में दिखा अद्वितीय संगम... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

दैनिक भास्कर

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के दैनिक भास्कर... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

दैनिक भास्कर

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के दैनिक भास्कर... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

भारत सरकार की ओर से आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का समापन

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के भारत सरकार की ओर से आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का समापन... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

भारत सरकार की ओर से आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का समापन

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के भारत सरकार की ओर से आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का समापन... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

अपना शहर

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के अपना शहर... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)

अपना शहर

आज 2024 में पूर्वोत्तर भारत के अपना शहर... (Text continues with details of the event and the cultural significance of the attire.)



OCTAVE 2025



धन्यवाद जापन...

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा इस वर्ष पूर्वोत्तर के आठ राज्यों का सांस्कृतिक समागम 'ऑक्टो-2025' भागलपुर बिहार में आयोजित किया गया। जिसमें असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश एवं सिक्किम के लगभग 250 कलाकारों ने पूर्वोत्तर की लोक एवं जनजातीय संस्कृति का विहंगम रूप प्रस्तुत किया।

उत्तर पूर्व महोत्सव के ऑक्टोव कार्यक्रम को अविस्मरणीय बनाने के लिए आप सभी का हार्दिक आभार। आप सभी के योगदान ने इसे एक विशेष स्मृति बना दिया है।

कलाकारों, स्वयंसेवकों और दर्शकों के उत्साह और समर्थन ने इस उत्सव को जीवंत किया। प्रत्येक लोकनृत्य एवं रचनात्मक योगदान ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को उजागर किया और इस कार्यक्रम को और भी खास बनाया।

आप सभी के समर्थन और प्रेम के लिए एक बार फिर धन्यवाद।

सादर

एम. एम. मणि

प्रभारी कार्यक्रम

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज

OCTAVE 2025



प्रकाशक : उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज
प्रधान संपादक : श्री आशिस गिरि
संपादन एवं आलेखन : श्री एम.एम. मणि
मीडिया एवं रूप सज्जा : अम्बरीश द्विवेदी
सहयोग एवं कला योजन : शरद कुमार मिश्र

North Central Zone Cultural Centre, Prayagraj

14 C.S.P. Singh Marg, Prayagraj-211001 Phone No. 0532-2421855

✉ nczcc@rediffmail.com | 🌐 www.nczccindia